Vol-13 Special Issue- 1.4 ISSN- 2349-7076

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter)
Patron: Prof. R. G. Kothari
Chief Editor: Prof. Jignesh B. Patel
Email:- Mo. 9429429550 ctefeduinspire@gmail.com

# 'वसुधैव कुटुंबकम' के दार्शनिक पहलू और शैक्षिक व्यवहार

**डॉ. भावेश रावल**
सहयोगी प्राध्यापक
भारतीय शिक्षक शिक्षा संस्थान, गांधीनगर

## सारांश

'वसुधैव कुटुम्बकम' भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का एक गहरा अध्यात्मिक और सामाजिक दर्शन है। इसका दार्शनिक रूप दर्शाता है कि 'पञ्चमहाभूत' से बना हर मानव प्रादेशिक, सांस्कृतिक और राजकीय स्वरुप से अलग हो लेकिन तात्विक रूप से एक ही है। वर्तमान समय में सबसे प्रबल माध्यम शिक्षा के विभिन स्वरूपों के प्रयोग से इस प्रकार से कार्य करना चाहिए जिससे उत्तम मनुष्य निर्माण हो उसका 'समग्र विकास' संभव हो। इस पपत्र में दो प्रमुख बिन्दुओ को भारतीय संदर्भ में प्रस्तुत किया है। जिसमे दार्शनिक रूप में हमारे ग्रंथो में क्या क्या दर्शाया है? और दुसरे व्यवहारू स्वरुप में विद्यालय और कक्षा कक्ष में क्या क्या प्रवृतियाँ कर सकते है? जिससे छात्रों में 'वसुधैएव कुटुम्बकम' का भाव विकसित हो यह दर्शाया गया है।

**प्रमुख संकल्पनाए:** वसुधैव कुटुम्बकम, समग्र विकास,व्यूहरचना,मूल्य।

## वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा

'वसुधैव कुटुम्बकम' भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का एक गहरा अध्यात्मिक और सामाजिक दर्शन है। 'वसुधैव कुटुंबकम' यह शब्द तीन संस्कृत शब्दों से बना है जिसमे वसुधा: पृथ्वी, एव: वास्तव में/केवल, और कुटुंबकम: परिवार जिसका शाब्दिक अर्थ होता है –'पूरी दुनिया वास्तव में एक परिवार है।' दार्शनिक रूप से, यह बताता है कि पृथ्वी पर हर जीवित प्राणी जीवन के एक ही, आपस में जुड़े जाल का हिस्सा है। यह इस बात पर ज़ोर देता है कि-'भले ही हमारी भाषाएँ, संस्कृतियाँ और परंपराएँ अलग-अलग हों, लेकिन हमारा मूल सार और हमारी अंतिम मंज़िल एक ही है।'भारत आरंभ से ही 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव के साथ आगे बढ़ा है। इस का संदर्भ प्रमाण हमें अपने प्राचीन साहित्य और धर्मग्रंथों से मिलता है। जैसे की महा उपनिषद (VI.71-72): यह इस वाक्यांश का मुख्य स्रोत है। जिस में दर्शित श्लोक इस प्रकार है:

अयं बन्धुरयं नेति गणना लघुचेतसाम् |
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ||

अर्थात "यह मेरा रिश्तेदार है और वह अजनबी है" यह छोटी सोच वालों की गणना है; महान चरित्र वालों के लिए, पूरी दुनिया ही एक परिवार है।

ऋग्वेद में 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' (सत्य एक है, बुद्धिमान लोग इसे कई नामों से पुकारते हैं) का उल्लेख है, जो एक वैश्विक परिवार की बहुलवादी नींव का समर्थन करता है।

हमारी साहित्यिक विरासत 'हितोपदेश' और 'पंचतंत्र:' की कहानियाँ इस अवधारणा का उपयोग करके युवा मन को एक महान हृदय (उदार-चरित) के गुणों और स्वार्थी मन की सीमाओं के बारे में सिखाती हैं।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

भारत में सामाजिक जीवन के आधारस्तंभ 'महाभारत' और 'रामायण, दोनों महाकाव्य धर्म (धार्मिकता) पर एक सार्वभौमिक कानून के रूप में ध्यान केंद्रित करते हैं जो दुनिया को बनाए रखता है (लोक-संग्रह)। भगवान राम के चरित्र को अक्सर उन मूल्यों के प्रतीक के रूप में देखा जाता है जो "विश्व-परिवार" की रक्षा करते हैं। महाभारत मै भी भगवदगीता और धर्म का जो महात्मय दर्शाया है वह सर्व स्वीकृत मूल्यों को दर्शाता है।

समय काल के प्रवाह में विद्वानोंने अपने चिंतन और सामाजिक परिद्रश्य के अनुभव के आधार पर नीति विधान भी किया है जैसे की चाणक्य राज्य की सुरक्षा पर जोर देते हैं, वहीं उनके नीति सूत्र यह तर्क देते हैं कि एक सच्चे नेता को लोगों के कल्याण को ऐसे सुनिश्चित करना चाहिए जैसे वे उसका अपना परिवार हों। विदुर नीति इस बात पर जोर देती है कि परिवार के लिए व्यक्तिगत लालच का त्याग किया जाना चाहिए, और गाँव के लिए परिवार का, अंततः यह सुझाव देते हुए कि आत्मा (उच्च सत्य) के लिए, पूरी दुनिया को भी अपनाया जा सकता है।

भारत हंमेशा से 'वसुधैव कुटुंबकम' के आदर्श को साथ लेकर चला है, जिसका प्रमाण हमारे राजनीति और विदेशनीति में भी मिलता है. आजादी के लिए किये गए आंदोलनों में शांतिपूर्ण आन्दोलन प्रमुख था। असहयोग और अहिंसा के मंत्रो को वैश्विक स्तर पर अपनाया जाता है। हमारी विदेशनीति का प्रमुख केंद्र रहा पञ्चशील जिसमे शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पाँच सिद्धांत (संप्रभुता के लिए आपसी सम्मान, अनाक्रमण, अहस्तक्षेप, समानता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व) वसुधैव कुटुंबकम की आधुनिक राजनीतिक अभिव्यक्तियाँ हैं।

हमारे दार्शनिक आधार केवल किताबी ख्याल नहीं रहे है हमारी युद्ध में उल्जे देश के प्रति भावना और सही में क्या होना चाहिए वह स्पष्ट रहा है। कोविड के समय विश्व को औषधि और सहाय देना।आतंकवाद जैसे मुद्दों पर दुसरे देशो को जोड़कर सामना करना और UN में इस मुद्दों पर मिलकर काम करना हमारी 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव प्रतिबद्धता दर्शाता है। भारत को G-20 अध्यक्षता का अवसर प्राप्त हुआ था तो G-20 की थीम, 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' रखा गया था। जो दर्शाता है कि-'हम पुरे विश्व को परिवार मानते है और सब के कल्याण की कामना करते है।' यह दिखाता है कि ये प्राचीन मूल्य 21वीं सदी की वैश्विक कूटनीति को सक्रिय रूप से आकार दे रहे हैं।

**'वसुधैव कुटुंबकम' विचार के संदर्भ में शैक्षिक व्यवहार की योजना**

**अ. शिक्षण-अधिगम में वसुधैव कुटुंबकम को एकीकृत करना**

इस दर्शन को आधुनिक शिक्षा में एकीकृत करना पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़कर है; इसका लक्ष्य वैश्विक नागरिक विकसित करना है। इस संदर्भ में विभिन्न क्षेत्रे में सुनियोजित एवं समावेशी अभिगम अपना सकते है। इसके लिए सरकार, क्षेत्र के बौद्धिक वर्ग, विभिन्न संस्थाने, गेर सरकारी संगठन एवं संस्थाए, शिक्षक, छात्र और अभिभावक इन सभी का योगदान शिक्षा के साथ इस योग्यतम अभिगम को एकीकृत करके परिणामदायी बना सकता है। यहाँ इस संदर्भ में क्या किया जा सकता है उसे स्पष्ट करने के लिए कुछ व्यूहरचना एवं द्दष्टीकोण को दर्शाया है।

## अधिगम व्यूहरचना और दृष्टिकोण

| **अधिगम** | **वर्णन** |
|---|---|
| आंतर विद्याशाखाकीय एकीकृतता | भौगोलिक परिदृश्य को इतिहास के साथ जोड़ना हो तो आबोहवा परिवर्तन और वैश्विक नागरिकता को जोड़कर समज सकते है इस दोनों मुद्दों की चर्चा में मानवीय आंतरक्रियाओ को दर्शाता है। |

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

| अधिगम | वर्णन |
|---|---|
| मूल्य आधारित शिक्षा | स्पर्धात्मक अध्ययन से सहकारी अध्ययन की और जाना जो सामान्यता की और ध्यान केन्द्रित करता है। |
| समावेशी पद्धतिशास्त्र | विविधतापूर्ण कक्षा का निर्माण करना चाहिए जंहा भाषाकीय, सांस्कृतिक और भौतिकी दृष्टी से परिवार जैसे व्यवहार करना |
| चिन्तनात्मक पूछताछ | प्रश्नों से इस प्रकार छात्रों को चिंतन की और ले जाना जिससे अनुभूति हो की कैसे उनका कार्य वैश्विक स्थिति को प्रभावित करता है। उदाहरण स्वरुप प्लास्टिक उपयोग का वैश्विक प्रदुषण पर प्रभाव। |

## ब. शैक्षिक व्यवहार का वास्तविक स्वरुप कक्षा-कक्ष प्रवृतियाँ

वर्तमान समय में कक्षा कक्ष की विभिन्न प्रवृतियाँ शिक्षक के शैक्षिक व्यवहार पर निर्भर करती है। जिस के माध्यम से शिक्षक विभिन्न प्रविधियो के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम के भाव को छात्रों में आरोपित कर सकते है। इसी प्रकार विद्यालय में छात्रों के समग्र विकास की अवधारणा पर काम करते हुए उनके विकास पर अधिक ध्यान देना आवश्यक है। छात्रों के साथ जुड़े सभी पक्षकार और प्रवृतियाँ करते समय छात्रों में निजी भाव से उपर उठकर वैश्विक दृष्टी विकसित हो यह केंद्र में रख सकते है। शिक्षा के ध्येय, अभ्यासक्रम संरचना और उसके अनुरूप अध्यापन, मूल्यांकन सभी पहलू पर काम करने से सफलता मिल सकती है। इस के अंतर्गत शिक्षक की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण बनती है जैसे कि कौन सी प्रवृतियाँ करने से छात्रों में वसुधैव कुटुम्बकम के भाव का निर्माण हो सकता है? यह सोचना चाहिए। यह करने में विषयों, भाषा, संस्कृति और भेदभाव दूर रखना चाहिए। शिक्षक अपने अध्यापन, शैक्षिक प्रविधियो में नूतन प्रयोग कर सकते है। जैसे की प्रोजेक्ट के स्वरुप में वैश्विक स्तर पर आज की स्थिति संदर्भ में "दुनिया के चेहरे" प्रोजेक्ट दे सकते है जिसमे छात्र अपने देश से अलग किसी दूसरे देश पर संशोधन करते हैं, जिसमें किसी एक समान मानवीय मूल्य पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है इस से अन्य देश की संस्कृति को जानने और समजने का अवसर प्राप्त होगा। आज टेरिफ के मामले में वैश्विक युद्ध का माहोल बन चूका है। ऐसे समय में भावात्मकता और दुसरो के प्रति समज का विकास हो इसलिए "ग्लोबल लंचबॉक्स" या समूह में बैठकर भोजन करना एसा एक सेशन रख सकते है। जिसमें छात्रों अपने खाने की चीज़ों की शुरुआत का पता लगाते हैं (जैसे, भारत से मसाले, अमेरिका से गेहूं, अफ्रीका से कॉफी, चीन से चाय) ताकि इसके माध्यम से पारस्परिक आर्थिक और कृषि निर्भरता को समझ सकें। यदि विद्यालय में छात्रों के बीच झगड़ा हो तो उसे सुलझाने का रोल-प्ले छात्रों के द्वारा ही करवा सकते है, जिसमे हम अपनी धार्मिक और नैतिक विरासत 'विदुर नीति' पर आधारित प्रसंग का उपयोग कर सकते है, जिस के आधार पर छात्र "सज़ा-केंद्रित" सोच के बजाय "परिवार-केंद्रित" सोच का इस्तेमाल करके खेल के मैदान या वर्गखंड के झगड़ों को सुलझाने का अनुबव प्राप्त करते हैं। इसी तरह पर्यावरण की देखभाल को पंच महाभूत के संदर्भ में स्पष्ट किया जा सकता है. इसमें पांच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) पर आधारित प्रवृतियाँ करके यह दिखाना चाहिए कि प्रकृति राजनीतिक सीमाओं को नहीं पहचानती; स्थानीय पर्यावरण की रक्षा करना वैश्विक परिवार की सेवा है। अंत में यह स्पष्ट होता है कि भारतीय शास्त्रों में निहित दर्शन हमारे लिए अमूल्य विरासत है। जिसका प्रयोग आधुनिक समय में शिक्षा के माध्यम से व्यवहार में ला सकते है जिसका परिणाम यह होगा कि भावी पीढ़ी में वसुधैव कुटुम्बकम का भाव प्रबल होगा। शिक्षक अपने अध्ययन से अपने अमूल्य ग्रंथो की विरासत को कक्षा कक्ष कि प्रवृतियों से जोड़कर छात्रों को भारतीय ज्ञान परम्परा से अवगत और समृद्ध कर सकते है।

EduInspire-An International E-Journal
An International Peer Reviewed and Referred Journal (www.ctegujarat.org)
Council for Teacher Education Foundation (CTEF, Gujarat Chapter) Email:- ctefeduinspire@gmail.com

## संदर्भ सूची (Reference List)

कौटिल्य. (2010). कौटिल्य अर्थशास्त्र (वाचस्पति गैरोला, अनु.). चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान. वाराणसी, भारत।

गोयन्दका, ह. (संपादक). (2020). 108 उपनिषद (तीन खंड). गीता प्रेस. गोरखपुर, भारत।

दयानंद सरस्वती, स्वामी. (2015). ऋग्वेद-भाष्यम्. आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट. (मूल कार्य प्राचीन काल में प्रकाशित)। दिल्ली, भारत।

पंडित, न. (2014). हितोपदेश (सुबोध पाठक, अनु.). चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी, भारत।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE). (2021). एकीकृत शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम (ITEP) मार्गदर्शिका. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. नई दिल्ली, भारत।

वाल्मीकि. (2016). श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण. गीता प्रेस. गोरखपुर, भारत।

विदेश मंत्रालय. (2023). भारत की विदेश नीति: नए आयाम. भारत सरकार. नई दिल्ली, भारत।

व्यास, वे. (2012). सचित्र महाभारत. गीता प्रेस. गोरखपुर, भारत।

व्यास, वे. (2019). श्रीमद्भगवद्गीता (तत्वविवेचनी टीका). गीता प्रेस. गोरखपुर, भारत।

शर्मा, वि. (2018). पंचतंत्र (श्यामचन्द्र कपूर, अनु.). प्रभात प्रकाशन. दिल्ली, भारत।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय. (2014). पंचशील: शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के पांच सिद्धांत. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार. नई दिल्ली, भारत।